DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
अलंकार
PART-02
LIVE
20-08-2024 05:00 PM

अलङ्कार-ज्ञानम्

श्लेष-अलङ्कार

श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।

जब एक पद के द्वारा अनेक अर्थ अर्थात् किसी एक ही शब्द के अनेक अर्थ प्रकट हो तो, उसे श्लेष अलंकार कहते हैं। जैसे-

उदा: प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि। 1।।

सूर्य

यहाँ एक "विधौ" पद के दो अलग-अलग अर्थ प्रकट होते हैं। विधिः- भाग्य और विधुः चन्द्रमा यहाँ 'विधौ' पद विधु एवं विधि शब्द दोनों के सप्तमी एकवचन में बनता है।

सर्वस्वं हर सर्वस्य ॥ २॥

यहां 'हर' पद का अर्थ दो प्रकार से है। यहाँ एक अर्थ शिव तथा दूसरा अर्थ हरण करने की क्रिया से है। तब इस वाक्य के दो अर्थ बनते हैं:-

1. हे शिव आप सभी के सर्वस्व हो।

2. हे प्रभु आप सभी के दुखों का हरण करो।

उपमा-अलङ्कार

लक्षण:

"साधर्म्यम् उपमा भेदे"

दो अलग-अलग पदार्थों में समानता बताना उपमा अलंकार है।

प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमेत्यभिधीयते।

दो पदार्थों में भेद होने पर भी दोनों के मध्य स्पष्ट और सुंदर समानता बताना उपमा अलंकार होता है।

साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।

जहाँ दो पदार्थों में उनके विधर्मी लक्षणों को छोड़कर जब एक वाक्य के द्वारा उन दोनों में समानता दिखाई जाए तो, उसे उपमा अलंकार कहते हैं।

उपमा के चार अंग/कारक होते हैं:-

1. उपमान: जिस से तुलना या समानता की जाती है।

2. उपमेय: जिसको उपमा दी जाती है।

3. साधारण धर्म (समान धर्म): उपमान उपमेय में पाए जाने वाला सामान धर्म-

- गुणगत
- क्रियागत
- गुण क्रियागत

4. उपमान वाचक शब्द: सादृश्य को बताने वाले शब्द जैसे:- इव, यथा, समान, सम, तुल्य आदि।

उदाहरण-

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतियाय पतिवरासा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदेविवर्णभावं स स भूमिपाल: ।।

रात्रि के समय में संचरण करती हुई दीपशिखा आगे-आगे उजाला और पीछे-पीछे अंधेरा करती जाती है।

उसी दीपशिखा के समान पति का वरण करने वाली इंदुमती जिस राजा को छोड़कर आगे बढ़ रही है वह मलिनता को प्राप्त हो रहे हैं और आगे के राजाओं में खुशी छा रही है। इसमें उपमान दीपशिखा, उपमेय इन्दुमती, समानधर्म संचारिणी, उपमान शब्द इव है।

अन्य उदाहरण-

स्वप्नेऽपि समरेषु विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवंकान्तं, स्वाधीनपतिका यथा।

हे राजन् ! जैसे पति के अधीन रहने वाली पत्नी अपने पति को कभी नहीं छोड़ती, उसी पत्नी के समान यह विजय श्री भी सपने के युद्ध में भी आपको नहीं छोड़ती है। यहाँ उपमान स्वाधीनपतिका, उपमेय विजयश्री, समान धर्म न मुञ्चति तथा उपमा वाचक शब्द यथा है।

तस्याः मुखं कमलम् इव सुन्दरम् अस्ति।

यहाँ उपमेय मुखम्, उपमान कमलम्, उपमानवाची शब्द इव तथा साधारण धर्म सुन्दरम् है।

रूपक-अलङ्कार

लक्षण:-

रूपकं रूपितारोपाद्विषये निर्पह्नवे।
तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेयोः ॥

उपमान और उपमेय अलग-अलग होते हैं। जब उपमान और उपमेय में अभेद दिखाया जाए या उपमेय में उपमान का आरोप कर दिया जाए तथा अर्थ करते समय "रूपी" शब्द का प्रयोग हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है। जैसे-

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले ।

काव्यामृत रसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह।

यहाँ संसार रूपी (विष) वृक्ष के दो ही रसवान फल है। काव्य रूपी अमृत का रसास्वादन और सज्जनों की संगति। यहां संसार और विषवृक्ष को तथा काव्य और अमृत को एक ही माना गया है।

उत्प्रेक्षा-अलङ्कार

लक्षण-

संभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृत्य समेनयत् ।

या भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना ।।

जब उपमेय की उपमान के साथ संभावना दिखाई जाए, वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है। उत्प्रेक्षा अलङ्कार में मन्ये, शङ्के, ध्रुवम्, प्रायः, नूनम्, ऊहे, तर्कयामि, चिन्तयामि आदि शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे-

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥

शकुंतला

अभिज्ञानशकुन्तलम् के इस श्लोक में कण्व ऋषि कहते हैं "कन्या तो पराया धन ही होती है। शकुंतला को आज पति के घर भेजकर उस तरह संतुष्टि प्राप्त कर रहा हूँ, जैसा मानो किसी की ध रोहर को लौटाने पर होता है। जहाँ शकुंतला में धरोहर रूपी वस्तु की संभावना दिखाई गई है।

अन्य उदाहरण:-

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि, वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता ॥

लिम्पति + इव

यहां अंधकार जैसे शरीर को लेप रहा है, आकाश काजल या अञ्जन बरसा रहा है आदि की संभावना दिखाई जा रही है। अतः उत्प्रेक्षा अलंकार होगा। वस्तुतः यह संभव नहीं है कि अंधकार शरीर को ले जाए।

अर्थान्तरन्यास अलंकार -

- यह अर्थालंकार है। सम्भाव्यमान अर्थ के उपपादन के लिए दूसरे अर्थ से जहाँ समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास होता है।

- अर्थात् समर्थ्य (जिसका समर्थन किया जाता है) वाक्य का दूसरे वाक्य से समर्थन किया जाता है। (अर्थान्तर शब्द का अर्थ है-एक अर्थ का समर्थन करने के लिए अर्थान्तर-दूसरे अर्थ को, न्यास = रखना।)

- लक्षणम् -

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते। यत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधणेतरेण वा ।।

- अर्थात् जहाँ साधर्म्य से सामान्य का विशेष से अथवा विशेष का सामान्य से समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

उदाहरणम् -

- हनुमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम्।

अर्थ - हनुमान ने समुद्र पार किया, महात्माओं के लिए क्या दुष्कर है?

- यहाँ विशेष का सामान्य से समर्थन किया गया है, यह अर्थान्तरन्यास अलंकार का उदाहरण है।

पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।"

इस पद्य में कौन सा अलंकार है?

प्रस्तुत पद्य का अर्थ राजा और याचक इन दोनों के दृष्टि से हो सकता है।

शब्द	राजा के पक्ष में	याचक के पक्ष में
पृथुकार्त स्वरपात्रं	राजा का घर सोने के बडे बडे बर्तनो से युक्त है।	याचक का घर बालकों के भूख से रोने का स्थान है।
भूषितनि: शेषपरिज नं	सारे सेवक अलंकृत है।	सारे सेवक भूमि पर पडे है।
विलसत्क रेणुगहनं	झूमती हुई हथिनियों से युक्त महल है।	चूहों के खोडे हुए बिलों की धूल से भरा घर है।

- अतः याचक राजा से कहता है, सांप्रत हम दोनों का घर समान है।

- इस श्लोक का अर्थ दो पद्धति से होता है, अतः "श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते" अर्थात् चिपके हुए पदों से अनेक अर्थों का प्रतिपादन होता है, वह श्लेष अलंकार होता है, इस अर्थ से प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर 'श्लेषः' यह है।

ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रेकामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम् ॥

= छेकानुप्रास

लाटानुप्रासः- शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः। शब्दानुप्रास तो वह है जहाँ (समान शब्दार्थ होने पर) केवल तात्पर्य मात्र का भेद होता है, तो वह लाटानुप्रास कहलाता है। कुछ अन्य के अनुसार अनेक पदों के सादृश्य में होना ही लाटानुप्रास कहलाता है।

यथा-

यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।
यस्य न सविधेदयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य ॥

यमकम्- अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। अर्थात् - भिन्न भिन्न अर्थ वाले वर्ण समुदाय का पूर्वक्रम से ही (सा) आवृत्ति (पुनः श्रुतिः) यमक अलङ्कार कहलाता है।

1. अनपह्नुतभेदयोःउपमानोपमेययोः योऽभेदः स भवति -

(a) उपमेयोपमालङ्कारः

(b) अपह्नुति-अलङ्कारः

(c) अतिशयोक्त्यलङ्कारः

(d) रूपकालङ्कारः

2. कमलमिव मुखं मनोज्ञमेतत्' इत्यत्र कः अलङ्कारः?

(a) उपमा

(b) रूपकम्

(c) उत्प्रेक्षा

(d) अर्थान्तरन्यासः

3. अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः।

अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।'

इत्यत्र कः अलङ्कारः वर्तते ?

(a) रूपकम्

(b) अनुप्रासः

(c) श्लेषः

(d) यमकम्

4. पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनि:शेषपरिजन दैव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयो: सदनम्॥'

इत्यत्र क: अलङ्कार: वर्तते ?

(a) अर्थान्तरन्यास:

(b) उत्प्रेक्षा

(c) उपमा

(d) श्लेष:

5. पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।'
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।।'
इत्यत्र कः अलङ्कारः वर्तते ?

(a) रूपकम्

(b) अनुप्रासः

(c) अर्थान्तरन्यासः

(d) उपमा

6. एतयोः अलङ्कारयोः 'इव' शब्दस्य प्रयोगो भवति-

(a) उपमा-रूपकयोः

(b) उपमा-उत्प्रेक्षयोः

(c) उपमा-विभावनयोः

(d) उपमा-श्लेषयोः

Sat - 2PM

Sun - 8AM